

वाक्पटु - वाक् (बोलने) में पटु (चतुर).

कविराज - कवियों में राजा.

मध्यांतर - मध्य में अंतर.

जराधम - जरा में अधम (नीच).

काव्यनिपुण - काव्य में निपुण.

तत्समीन - तत् (उसी) में समीन.

जलमग्न - जल में मग्न.

डिक्काबंद - डिक्का में बंद.

## (V) उपपद तत्पुरुष-

इस समास का दूसरा पद कोई न कोई प्रत्यय होता है, इसलिए इसे उपपद तत्पुरुष समास कहते हैं-

जैसे- जलज - जल में जन्म, स्वर्णकार - स्वर्ण का काम करने वाला  
चर्मकार - चर्म का काम करने वाला, राजनीतिज्ञ - राजनीति को जानने वाला  
अफीम-ची - अफीम का काम करने वाला, तेली - तेल का काम करने वाला

④ कर्मधारय समास- 'दूसरा पद प्रधान'

इस समास में विशेषण और विशेष्य

अर्थात् उपमान और उपमेय के अर्थ का बोध होता है-

जैसे- पूजा सुंदर है।  
विशेष्य विशेषण

रक्तलोचन- रक्त के समान लाल है जो लोचन  
विशेषण विशेष्य (नैपुण्य)

विशेषण -

किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं, विशेषण को ही उपमान भी कहते हैं-

जैसे- सुगन्धयनी - सुगन्ध के नयनों के समान नयनों वाली  
विशेषण विशेष्य

का पुरुष - कायर है जो पुरुष  
विशेषण विशेष्य



विशेष्य-

विशेषण/उपमान के द्वारा जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहते हैं, विशेष्य को ही उपमेय भी कहा जाता है -

जैसे- नीलकमल - नीला है जो कमल  
 विशेषण विशेष्य  
 मंदबुद्धि - मंद है जिसकी बुद्धि  
 विशेषण विशेष्य

चंद्रमुखी - चन्द्रमा के समान सुंदर मुख वाली  
विशेषण विशेष्य

सुपाच्य - सुष्ठु (अच्छा) है जो पचने में

कुकर्म - कुत्सित (बुरा) है जो कर्म

दुष्कर्म - बुरा है जो कर्म

सुशासन - अच्छा है जो शासन

उदयाचल - उदय हुआ है जिस अचल से  
पर्वत

अस्ताचल - अस्त हुआ है जिस भयल में

वीतकाम - वीत (समाप्त) हो गई है इच्छाएं जिसकी

जीमोत्पल - नीला है जो उत्पल (कमल)

शिष्टाचार - शिष्ट है जो आचार

मँध विश्वास - मँधा है जो विश्वास

एकाग्रचित्त - एक ही जगह है जो चित्त  
(मन)

शक्तिवर्धक - शक्ति का है जो वर्धक